ISSN- 2350-0530(O), ISSN- 2394-3629(P)
Index Copernicus Value (ICV 2018): 86.20
DOI: https://doi.org/10.29121/granthaalayah.v7.i11.2019.3741

INTERNATIONAL JOURNAL OF RESEARCH – GRANTHAALAYAH
A knowledge Repository

Arts

मिर्जापुर के पुरा शैल चित्र स्थल

आकांक्षा सिंह [1], प्रो. के. रतनम [2]

[1] शोधार्थी (चित्रकला) जीवाजी विश्वविद्यालय, ग्वालियर (म.प्र.)

[2] प्राध्यापक (इतिहास) शासकीय कमलाराजा कन्या स्नातकोत्तर, (स्वशासी) महाविद्यालय, ग्वालियर (म.प्र.)

शोध-सारांश

प्रागैतिहासिक काल के मानव का काल जो अंधकार युग के नाम से प्रतिबिम्बित है, को अज्ञात काल से भी पुकारा जाता है, और इस काल में लिपि का अविष्कार नही हआ था, इस स्थिति में मानव ने अपनी आन्तरिक भावनाओं को प्रकट करने का माध्यम चित्रों को बनाया, उसने जो देखा या महसूस किया, उसे चित्रों के माध्यम से निष्पादित किया, इन चित्रों के अवलोकन से प्रागैतिहासिक मानव के संघर्षपूर्ण जीवन प्रक्रिया तथा विषम वातावरण का ज्ञान प्राप्त होता है। कैसे इतनी विषम परिस्थितियों से संघर्ष करते करते उसे चित्रण करने का विचार आया होगा और सिर्फ विचार ही नही, इतने व्यापक पैमाने पर चित्रण का अविष्कार कैसे किया होगा, किन्तु हमारे इन विचारों से बहुत आगे, प्रागैतिहासिक मानव ने अपनी मौलिक उद्भावना एवं सौन्दर्य बोध का प्रमाण हमें शैल चित्रों के माध्यम से दिया।

मुख्य शब्द – मिर्जापुर, शैल, चित्र स्थल

Cite This Article: आकांक्षा सिंह, प्रो. के. रतनम. (2019). "मिर्जापुर के पुरा शैल चित्र स्थल." *International Journal of Research - Granthaalayah*, 7(11SE), 229-234. https://doi.org/10.5281/zenodo.3592553.

बघेलखंड की उत्तरी सीमा उत्तर प्रदेश के दक्षिण पूर्व कोने से लगी हुई है, जो कि एक पर्वतीय क्षेत्र है, जो गंगा नदी के दक्षिण में स्थित है, यह अभी कुछ समय पहले तक मिर्जापुर जिले में आता था, परंतु अब प्रशासनिक दृष्टि से यह दो भागों में बांटा गया है। पहला भाग जो उत्तर दिशा का है, पूर्वतः मिर्जापुर ही है और दूसरा दक्षिण का भाग जो सोनभद्र कहलाता है, सोनभद्र का नाम यहाँ मध्य क्षेत्र में बहने वाली सोनभद्र नदी के नाम पर रखा गया है, यह लगभग दो राज्यों से घिरा है, पूर्व में बिहार और दक्षिण पश्चिम में मध्यप्रदेश से। सोनभद्र जनपद के मुखयालय राबर्टगंज सड़क के रास्ते वाराणसी, मिर्जापुर और इलाहाबाद से जुड़ा हुआ है। रेलगाड़ी इलाहाबाद से मिर्जापुर फिर चुनार और इसके बाद डाल्टनगंज और उसके आगे राबर्टगंज से होकर जाती है, यह क्षेत्र वनों की वजह से यहाँ ठहरने के लिए आवासीय सुविधा नहीं है, परंतु फिर भी स्थानीय लोग, वन विभाग और सिंचाई विभाग में बने विश्राम आश्रयों से यह कमी पूरी हो जाती है।

सोनभद्र नदी के उत्तर में कैमूर पर्वत श्रृंखला जो बलुआ पत्थरों से बनी, स्थित है। लेकिन इसके दक्षिण में कम पत्थर वाली छोटी पहाड़ियां जिनका विस्तार चारों तरफ है। सोनभद्र नदी के प्रवाह के साथ कैमूर श्रृंखला पश्चिम में मध्यप्रदेश की सीमा और पूर्व में बिहार तक पर्वतीय पठार बनाती, फैली हैं। इस क्षेत्र की प्रमुख नदी

ISSN- 2350-0530(O), ISSN- 2394-3629(P)
Index Copernicus Value (ICV 2018): 86.20
DOI: 10.5281/zenodo.3592553

कर्मनासा नदी, बेलन नदी जो अनेक छोटी-छोटी धारायें बनाती हैं और यह धाराएं जगह-जगह सुंदर मनमोहक जल प्रपात बनाती हैं, दक्षिण में कनहार, रिहन्द, बिजुल आदि नदियां इसकी सहायिकाएं हैं।

यह क्षेत्र लगभग 100 वर्षों से अधिक घने जंगलों से आच्छादित वन्य प्राणियों के लिए प्रसिद्ध रहा, परंतु अब विकास कि ओर प्रशस्त यह क्षेत्र, राबर्टगंज, चुर्क, पन्नूगंज, घोरावल, राजगढ़, शाहगंज यडिहान, जिसमें सलखन, डाला, चुर्क, ओबरा और रेनुकूट औद्योगिक केंद्र के रूप में विकसित हो चुके है, जिसके कारण यहाँ पर नाम मात्र के जंगल है पूरे क्षेत्र में अभियानिक तौर पर जंगलों को काटा गया है। फिर भी सोन नदी के आसपास और सड़क क्षेत्रों से दूर विजयगढ़ वेडेला-खोड़ेला और कैमूर वन्य अभ्यारण जैसे क्षेत्र अभी भी जंगलों से आच्छादित मनोरम दृश्य प्रस्तुत करते है। इन क्षेत्रों में तेंदुए, भालू, वराह, हिरण और नीलगाय जैसे जंगली जीव देखे जा सकते हैं। यहाँ की वनस्पति भी उल्लेखनीय है जिसमें सलाई, खैर, करन, बेर, चिरौंजी, पलाश आदि हैं। प्राप्त साक्ष्यों के आधार पर यह ज्ञात होता है कि यहाँ प्रागैतिहासिक मानवों का निवास रहा होगा। 'हैण्डेक्स', 'क्लीवर', 'स्क्रेपर', 'ब्लेड' और लघु उपकरणों, हथियारों के प्रमाण इस बात की पुष्टि करते है, इन प्रमाणों से ज्ञात होता है कि इन क्षेत्रों में प्रागैतिहासिक मानवों का निवास लम्बे समय तक रहा होगा इन मानवों में खखारों का नाम मुख्य है।

यह क्षेत्र आदिवासियों और बाहर से आने वालों का मिलन स्थल होने के कारण दोनों संस्कृतियों का, परम्पराओं का आदान-प्रदान हुआ होगा और इससे उत्पन्न नए तत्वों को समझने के लिए यह एक आदर्श स्थल हो सकता है, इस क्षेत्र में विद्वानों ने रुचि लेना प्रारम्भ कर दिया था, इन विद्वानों में काकबर्न का नाम पहले आता है। लगभग 1883 से उन्होंने इस क्षेत्र में शोध कार्य प्रारम्भ किया जिसके परिणाम स्वरूप मिर्जापुर के शैलचित्र, शैलाश्रय और प्रागैतिहासिक क्षेत्र प्रकाश में आने प्रारम्भ हो गये, कुछ समय बाद रायसहाब मनोरंजन घोष, कृष्णस्वामी एवं सौन्दराजन आदि तथा इलाहाबाद, काशी हिन्दू विश्वविद्यालय तथा केंद्र व राज्य के पुरातत्व विभागों के सर्वेक्षकों के सतत प्रयासों ने इस क्षेत्र के प्रागैतिहासिक काल से लेकर मानवों के अबतक के साक्ष्यों को एकत्र किया तथा इन स्थलों की खोज के स्तर आज बढ़ चुके हैं। विंध्य क्षेत्र से प्राप्त शैलाश्रय क्षेत्रों को राधकान्त वर्मा ने तीन भागों में बांटा है और राकेश तिवारी ने 7 भागों में बांटा है, जिसमें राधकान्त वर्मा द्वारा बांटे गए क्षेत्रों भैंसोर क्षेत्र में वनस्थल 24 आश्रय, राजपुर में 4 स्थल 15 आश्रय हैं और अहरौरा क्षेत्र में 6 स्थल एवं 7 आश्रय हैं। राकेश तिवारी के द्वारा बांटे गए क्षेत्रों में मुइकी-चुनार क्षेत्र में 9 स्थल और 12 आश्रय हैं, सुकृत में 7 स्थल और 13 आश्रय हैं, कैमूर क्षेत्र में 17 स्थल 62 आश्रय, विजयगढ़ क्षेत्र मे 32 स्थल 91 आश्रय है, खरैला से 5 स्थल 11 आश्रय, भैंसोर क्षेत्र से 12 स्थल एवं 28 आश्रय हैं। पाये गए कुल आश्रयों कि संखया 240 थी इसमें पहले के खोजे गए आश्रय भी हैं। महत्वपूर्ण आश्रयों में 2000-2003 से दोबारा खोज के बाद कुछ क्षेत्रों का पता और लगा, जिसमें ककहारिया और भैंसोर क्षेत्र विशेष उल्लेखनीय हैं।

भैंसोर-मिर्जापुर के दक्षिण पश्चिम में स्थित एक छोटा सा गाँव है, जो मिर्जापुर और रीवा जिले के हनुमना सीमा पर स्थित है, जिसमें नौं क्षेत्र शामिल हैं। मोरहना, वेडिया, लड्बेरिया, बागा, बगही-खोर, गरचहवा, सुन्नीवाग, लेखहिया आदि। मोरहना पहाड़-शहबहिया के चित्रित शैलाश्रय विंध्य पहाडियों की ढलानों पर गंगा घाटी से दक्षिण में स्थित हैं। भैंसोर वहाँ से सबसे करीब स्थित गांव है, यह गांव हनुमाना से पाँच मील की दूरी पर स्थित है। आश्रय प्रयागराज रीवा और मिर्जापुर के त्रिसंगम पर स्थित है। पश्चिम की ओर स्थित यह पहाडी इलाका पहले जंगलों से आच्छादित था। परंतु अब जमीन उपजाऊ खेतों में बदल चुकी है। शैलाश्रय से चार पाँच कदम पर ही बारह मास बहने वाला झरना और एक छोटा कुण्ड था, जो कुछ मील के दायरे में पीने वाले पानी का एकलौता स्त्रोत था।

ISSN- 2350-0530(O), ISSN- 2394-3629(P)
Index Copernicus Value (ICV 2018): 86.20
DOI: 10.5281/zenodo.3592553

नीचे की घाटी में घना जंगल और जंगली जानवर थे ऊंचाई पर बैठ कोई भी यह कल्पना कर सकता है कि प्रागैतिहासिक मानव कैसे रहते थे और कैसे जानवरों का शिकार करते थे। जहां आधे किलोमीटर में कुल 6 शैलाश्रय हैं। जिनमें कुछ बहुत गहरे और कुछ बहुत छोटे हैं, यहाँ पर पाए गये पुरातात्विक साक्ष्य कई संग्राहलयों में देखे जा सकते हैं, जिसमें इलाहाबाद म्युजियम प्रयागराज भी है। मिर्जापुर क्षेत्र का अवलोकन करने पर पता चलता है की यह क्षेत्र प्राकृतिक सम्पदाओं से बहुत ही संमृद्ध है। जैसे एल्युमिनियम, चूना ,कोयला, हेमेटाइट, सीमेंट। यहाँ बहुत सारे वन औद्योगिक विकास के कारण काट दिये गये है फिर भी अभी ऐसा अनुमान है, कि 50 प्रतिशत तक चित्रित शैलाश्रयों को खोजा जाना बाकी है। इन जगंलो में अनेक प्रकार के जीव जैसे सर्प, तेन्दुआ, भालू, बारहसिंहा, तीतर-बटेर, वनमुर्गी, नीलगाय, सियार, भेडिया, अजगर, गोह, सांभर, लंगूर, हिरण आदि प्राप्त होते है10। यहां अनेक प्रकार के पेड पौधो की प्रजातियां भी देखने को मिलती है। जैसे महुआ, आम, जामुन, बेल, बांस, बेर, पलास, आंवला, चकवड़, चिरौजी, पीयार, अइलाइन आदि इन वानस्पतिक जीवन के साथ अनेक जनजातियां भी निवास करती है। जिनमें वंसवार, धांगर, पनिका, धरकार, गोड, चैरो, बैगा, कोल और खरवार। इन जनजातियों का गुजर बसर, खेती, आखेट, और जंगल की लकडी, फल फूल पर ही सीमित था, इन जंगलो में प्रायः सडक मार्ग है, जिनसे अनेक साधनों द्वारा यहां जाना अत्यन्त सरल हो गया है। इस क्षेत्र में, मडिहान, राजगढ़, घोरावल, चुर्क, राबर्टगंज, पन्नूगंज, अहरौरा और चुनार है। जहां बस और ट्रेन के द्वारा जाया जा सकता है1[1]

राजपुर, घोडमंगर, हरना-हरनी, लिखुनियां, सहबइया, मूडा-लिखुनियां, ढोकवा-महरानी और मुखादरी क्षेत्रों के शैलाश्रय काफी समय से संज्ञान में है। किंतु मगरदहा, गोहमनवा, दतहा-पहाड, जगरो-बांध के पास बनी मलिया गांव के निकट, शेखा (ललमनिया) अहरौरा के पास निम्वहिया मयरा रीवा मार्ग पर जिले के अंतिम गांव भैंसोर के दक्षिण में है। कउआखोह और हथबनवा विजयगढ दुर्ग से लगभग 15 कि.मी. दक्षिण पश्चिम में बघनार गांव के पास, गोहमनवा, मगदहा, तुरिया और मतहवा, विजयगढ दुर्ग के दक्षिण पूर्व में लगभग 12 कि.मी. क्षेत्र में सूगापंख, झरिया-नाला व कुप्पिहवा, कण्डाकोट और लिखनिया के बीच, कइरी पहाड, राजपुर के दक्षिण और दुअरा राजपुर से रीजुल गांव के रास्ते में है।

लिखनिया, राजपुर, घोडमंगर, हरना-हरनी, सहयइया, मुखादरी और ढोकवा-महरानी के शैलाश्रय ज्ञात है। कउआखोह, हथबनवा, गोहमनवा, मगरदहा तुरियानी, मतहवा, मूगापंख, झरियानाला, कुप्पिहवा कइरी, दुअरा, निम्बहिया, मयरा, धनपैरा, दंतहा पहाड और ललमनिया नये नाम है। विजयगढ किले के पश्चिमी दीवार के नीचे मांन-मून की गुफाओं में कई शैलचित्र मिलते हैं। इन शैलाश्रयों में सभी शैलचित्र पत्थरों पर या अनावृत चटटनों में विरल रूप में मिलते हैं। जैसा कि ज्ञात शैलाश्रय में चित्र छोटे पत्थरो पर बने हुए मिलते हैं। अनेक स्थान जैसे कउआखोह, हथबनी, लखमां, बरैला, खुरैला और भुतहिया आदि स्थानो में शैलचित्र मिलते हैं। झरने की तंग घाटी के उपरी और निचले क्षेत्र में लिखुनिया, भल्दरिया और निकरिया के शैलाश्रय स्थित है। लिखुनिया, गोचारा, केरवा और सूगापंख आदि शैलाश्रय पहाडियों में काफी ऊंचाई पर स्थित है, जहां से जगंल मनोरम दृश्य, घाटियाँ, पहाडियां और सीमेंट कारखानों की चिमनियां दिखायी देती हैं।

सूगापंख शैलाश्रय ऐसे क्षेत्र में स्थित है कि वहाँ पर छोटी सी गलती से जान को खतरा हो सकता है। सोराघाट और ढोकवा महारानी के अनावृत पत्थरों में खुरदरे चित्रों वाले शैलचित्र पाये जाते हैं। इन शैलाश्रयों के ऊपरी सतह पर चित्रित शैलचित्र हैं जिसमें एक विशेष तकनीकी (माइक्रोलिथिक) का प्रयोग किया गया है, इन शैलचित्रों का आकार 2 से 80 मी. लम्बा, 1 से 6 मी. ऊँचा, और 1 से 5 मी. गहरा है। शैलाश्रयों की छतों और अन्दर की चिकनी दीवारों पर चित्र चित्रित किये गयें हैं। भूतानिया और मान-मून की गुफाओ में ऐसे चित्र देखने को मिलतें हैं।

ISSN- 2350-0530(O), ISSN- 2394-3629(P)
Index Copernicus Value (ICV 2018): 86.20
DOI: 10.5281/zenodo.3592553

कुछ शैलाश्रय जैसे कउआखोह के शैलचित्रों में मटमैला पीला, काला, सफेद और हल्का पीला रंग का प्रयोग किया गया है। कुछ शैलचित्र वर्षा, तेज धूप और कीडे मकोडे द्वारा क्षतिग्रस्त हो गये हैं। मिर्जापुर के शैलाश्रयों में 105 दृश्यचित्र मिले हैं जिनमें से अत्यधिक मानव के चित्र हैं। ये चित्र दीवारों तथा छतों पर प्राप्त होते हैं परन्तु चित्र वर्षा और धूप की वजह से धुंधले या फिर चटटनों की पपडी बनकर टूटने के कारण पूरी तरह से नद्यट हो चुके हैं। कुछ चित्रों पर "पेटीनेशन" की मोटी परत चढ़ गई है। चित्र इतने ज्यादा क्षतिग्रस्त हैं कि अवशेष के रूप में बस किसी के सिर, कहीं हाथ, कहीं पैर आदि ही दिखाई देते हैं, जिससे यह अनुमान लगाया जा सकता है कि यहां पर कोई चित्र रहा होगा। परन्तु कुछ चित्र तो पूरी तरह से नष्ट हो गये हैं।

मगदहा के एक दृश्य में चार मानव को एक ओर से वायीं ओर एक को दाहिने तरफ हाथ उठाये दिखाया गया है दो मानव को कटिहस्थ मुद्रा में दर्शाया गया है। एक अन्य मानव के हाथ में एक वाद्ययंत्र के साथ गेरुएं रंग से चित्रित दिखाया गया है। हथिया अथवा दहता-पहाड़ में पांच दृश्य मिले हैं जिनमें पांच छोटे मानवों के साथ किनारे पर बडे मानवों को दर्शाया गया है। तुरियानी में एक शैलाश्रय में पांच लोग मानव को हाथ ऊपर करके चित्रित किया गया है। हथबनबा में जमीन से लगभग 4 मीटर की उंचाई पर एक विशाल शैलाश्रय पर चित्र मिले हैं। घोडमंगर में शैलाश्रय में ऊपर की तरफ चित्र मिले हैं।

करई पहाड़ जोकि राजपुर के दक्षिण पश्चिम में स्थित है, झरिया नाला (निकट अहरौरा), चनाइनमान (निकट राबर्टगंज), सीताकुंड (निकट पनौरा) राजा का बैठका आदि से मिले साक्ष्यों के आधार पर यहां आखेट के कई दृश्य मिले हैं जिसमें यहां डॉ. जगदीश गुप्त द्वारा उल्लिखित लिखनिया के पांच मानवों के समूह के आाधार पर भी चित्र बने हुए मिले हैं। गोल सिर वाले मानव जो एक दूसरे के हाथ में हाथ डाले खड़े हैं, सर्वाधिक प्रसिद्व चित्र है, जो सहबइया, राजा का बैठका, कण्डाकोट, मूडा, तुरियानी और हथबनवा से पाए गए हैं, सहबइया में सर्वाधिक समूह चित्र प्राप्त हुए हैं, मूडा और तुरियानी के कुछ मानवों की श्रेणियां भी दिखाई गयी हैं, जो गेरुएं रंगो के प्रयोग से बनाई गयी है। इसी प्रकार के चित्र भीमबेटका, चम्बल, पंचमढी और लिखु उडियार (अल्मोडा, उ. प्र.) के क्षेत्रो में भी पाये गये हैं।

मुखादरी में चित्र शैलाश्रयों के ऊपरी भाग में प्राप्त हैं। इन चित्रों में आकृतियां आयताकार मानवों की हैं, जो एक दूसरे को पकडे हुए हैं। ज्यादातर चित्र जानवरों के साथ मानवों के हैं। कप्पिहवा में चित्र यद्यपि बहुत बाद के हैं, इसमें बने चित्र अत्यन्त दुर्लभ और सुन्दर हैं। यहां पर कुछ चित्र ऐसे लगते हैं जैसे प्रकृति ने खुद ही बना दिया हो। यहां पर सफेद, काले, गेरुएं और सूखा हुआ खून भी चित्रण के लिए प्रयोग किया गया है। यहां चित्रों पर "पैटीनेशन" की मोटी परत जम गयी है और जगह-जगह पपड़ी जैसे टूट रही है, यहां पर स्त्री पुरूष एक साथ एक दूसरे के कमर पर हाथ डाले खडे हैं। ललमनिया पहाड से त्रिभुजाकार के मानवों का चित्रण प्राप्त हुआ है, जो गेरुएं रंग के जान पडते हैं। ऐसे मानव ताम्रयुग और कहीं-कहीं ऐतिहासिक पात्रों पर चित्रित हुए मिलते हैं इस प्रकार के चित्र भीमबेटका से भी प्राप्त हुए हैं।

कउआखोह में आयताकार मानवों का समूह चित्र हैं, जो घोडमंगर, हरना-हरनी और राजा का बैठका के अनिश्चित क्रम वाले नर्तक' जैसी ही दिखाई देते हैं। यहां के सभी चित्र को सूखे रक्त जैसे रंगों द्वारा प्रयोग करके बनाया गया है। चित्रों को यदि पानी से गीला करके देखें तो स्पष्ट रूप से दिखाई देते हैं। अत्यधिक चित्र कई कारणों से नष्ट हो चुके हैं, कुछ चित्रों में मानव हाथ में कोई वाद्ययंत्र लिए हुए है। सोहरोघाट, गोहमनवां, मूडा, घोडमंगर, दुअरा और हरनी-हरना से एकांकी मानवों के चित्र प्राप्त हुए हैं, सूगापंख में चमकदार पीली किनारी व सूखे रक्त जैसे रंग का प्रयोग दोहरी लाइनों में किया गया है। दो महत्वपूर्ण चित्रण, भूतहिया(मतहवा) के शैलाश्रय से शिकार करते हुए हिरण देखे गए हैं। कउआखोह और अन्य शैलाश्रयों में बाण से जख्मी हिरणों की लटकती गर्दन और अनुबंधित शरीर के साथ दर्शाया गया है,

ISSN- 2350-0530(O), ISSN- 2394-3629(P)
Index Copernicus Value (ICV 2018): 86.20
DOI: 10.5281/zenodo.3592553

इस प्रकार के चित्र कई शैलाश्रयों में बहुतायत मिलते हैं। जे. काकबर्न द्वारा खोजे गए मशहूर हिरण शिकार का दृश्य, जो कई अन्य लेखकों द्वारा बाद में छापी गयी। हिरण शिकार को चित्रित करता एक दुर्लभ उदाहरण केरवा घाट के शैलाश्रय से प्रकाश में आया, यह दृश्य सात शिकारियों द्वारा एक हिरण को सभी दिशाओं से घेरता हुआ दर्शाता है। पंचमुखी के गैंडे के शिकार का दृश्य जिसमें एक शिकारी एक बाण से घायल गैंडे का पीछा करते दिखाया गया है। जे. काकर्बन द्वारा साक्ष्य प्रस्तुत किया गया है। पहले उन्होने गलती से सुअर समझ लिया था किंतु अन्य दृश्यों के अवलोकन के बाद उन्होने अपनी गलती सुधारी।

मतहवा शैलाश्रय की छत पर चित्रित एक अन्य चरण में दो गैंडों पर बरछी एवं भाले से हमला होते दिखाया गया है। शिकारियों को उसकी ओर बहुत तेजी से बढता यहॉ तक कि लगभग उड़ता हुआ दिखाया गया है। कई जंगली भैंसों के शिकार के दृश्य मिर्जापुर के शैलाश्रयों मे पाये गये हैं। सबसे महत्वपूर्ण कउआखोह द्रौलाश्रय में पाया गया है, जिसमें जंगली भैंसे पर बरछी- भाले और बाण चलाते शिकारियों द्वारा सभी दिशाओं से हमला करते दिखाया गया है। भैंसा, जोकि एक्स-रे शैली में कई बाणों और बरछी-भालों से छाती, पूँछ और पीछे घायल है, एक शिकारी को हवा मे उसी प्रकार फेंकता दिखाया गया है। जैसे घोडमंगर मे गैडें द्वारा दर्शाया गए ।

कई शैलाश्रयों से सांड और नीलगाय के शिकार के दृश्य भी मिले हैं। मतहवा शैलाश्रय में दोनों के शिकार के एक-एक दृश्य है। हाथी का शिकार वाले दृश्य कुछ ही संख्या में मिले हैं। मुखादरी एवं धंधरोल में ऐसे दृश्य उल्लेखनीय हैं। मुखादरी शैलाश्रयों में दो हाथी पर शिकारियों द्वारा हमला करते दिखाया गया है। धंधरोल के दृश्य में एक आकर्षित मुकुट को पहने एक शिकारी हाथी पर बर्छी से हमला करते दर्शाया गया है। ढोकवा महरानी से एक शाही के शिकार की रचना सामने आई है, जिसमें एक शिकारी आग लगी लकड़ी के साथ साही की ओर बढ़ता दिखाया गया है, जिसके कांटे खड़े है ।

इगौना से प्राप्त शिकार चित्रों से यह ज्ञात होता है कि शिकार इनका प्रिय खेल था, उन्हें अकेले या व्यवस्थित शिकारियों द्वारा तीर, बर्छी या भाले से शिकार होते दर्शाया गया है। कउआखोह और केरवा आदि में चिन्हित, दृश्य इस नजरिये से महत्वपूर्ण हैं। कउआखोह के दृश्य में कई शिकारी काँटेदार तीरों से बड़े मगरमच्छ पर हमला करते दिखाया गया है। इनमें से कुछ मगरमच्छ के शिकार से संबन्धित हो सकते हैं किन्तु उनकी पहचान निश्चित नहीं है, इसलिए उन्हें इगुआना शिकार में वर्गीकृत कर दिया गया है। कुछ दृश्य मछली पकड़ने के भी दर्शाये गए हैं। कउआखोह के प्रारम्भिक दौर में मछली पकड़ने के दो साफ दृश्य दर्शाए गए हैं, जिनमें एक मछली एक काँटेदार अंकुश में फंसी दर्शाई गयी है, जिसका दूसरा शिरा एक लंबी छड़ से जुड़ा है। कउआखोह, गोचारा, केरवा और महगवा के आगे के दौरो में मछली पकड़ने के कई और दृश्य दर्शाये गए हैं।

शैल चित्र वास्तव में वैचारिक है और अवधारणात्मक नहीं है। दूसरे शब्दों में, कलाकार जानवरों की छाया प्रतियां तैयार नहीं कर रहा था बल्कि उसके अचेतन मन में बनने वाली छवियों को व्यक्त कर रहा था । शिलाचित्र विषय शैली तथा सामग्री की दृष्टि से उस समय के मानव जीवन के प्रतीक है, अर्थात इनके विषय मुख्यतः जानवर, उनका आखेट करते हुए मनुष्य, आपस में युद्ध करते हुए मनुष्य एवं पूजनीय आकृतियां हैं, इनकी शैली प्रागैतिहासिक है, इनकी सामग्री धातु खनिज रंग मुख्यतः गैरूं, हिरोजी आदि हैं, तथा इनके स्थान उ गुहा गृह एवं खुली चट्टाने हैं, परंतु ऐसा प्रतीत होता है कि प्रागैतिहासिक चित्र कलाकृतियां तत्कालीन मानव जीवन की जीवन्त कहानी है, जिनके सूक्ष्म अवलोकन से उनके सामाजिक, धार्मिक, आर्थिक, तथा प्राकृतिक शक्तियों के प्रति उनके विश्वासों का आकलन तथा ज्ञान प्राप्त किया जा सकता है।अप्रत्यक्ष उपमाओं के द्वारा

ISSN- 2350-0530(O), ISSN- 2394-3629(P)
Index Copernicus Value (ICV 2018): 86.20
DOI: 10.5281/zenodo.3592553

खाद्य-उत्पादन करने वाले समुदाय को शिकार-जमाव की सफलता आज नही मिली है, शैल चित्रण अध्ययन के लिए सतर्क और अलोचनात्मक दृष्टिकोण के लिए एक तर्क की आवश्यकता बढ़ गई है। मानव समाज के संज्ञानात्मक, कार्यात्मक प्रतिनिधित्व के बड़े हिस्से के रूप में शैल चित्र का अध्ययन करने की आवश्यकता है।

सन्दर्भ

[1] **वाकडकर**, डॉ. वी. एस., प्रिहिस्टोरिक केव पेंटिंग, मार्ग पब्लिकेशन, बम्बई, 1966, पृ. 28, 29 ।
[2] पांडे, एस. के., इण्डियन रॉक पेंटिंग-स्टडी ऐण्ड सिम्बल, मार्ग पब्लिकेशन, बम्बई, 1966, पृ. 28, 29
[3] तिवारी, डॉ. राकेश और चन्द्र, गिरीश, प्रागधारा अंक 2, पृ. 90, 91, 92 ।
[4] न्युमेयर, इरविन, प्रिहिस्टोरिक इण्डियन रॉक पेंटिंग, आक्सफोर्ड यूनीवर्सिटी प्रेस, कलकत्ता, 1983, पृ. 6, 7. 11 ।
[5] वर्मा, डॉ. राधाकान्त, रॉक आर्ट ऑफ सेंट्रल इण्डिया, नॉर्थ विंध्य रीजन-आर्यन बुक इंटरनेशनल, नई दिल्ली, 2012, पृ. 33, 37, 104, 105 106, 109 ।
[6] तिवारी, डॉ. राकेश थिरकते शैलचित्र, युवा परिभ्रमण एवं सांस्कृतिक-समिति, उत्तर प्रदेश, लखनऊ, 1982, पृ. 10, 11 ।
[7] गुप्त, डॉ. जगदीश, प्रागैतिहासिक भारतीय चित्रकला, राजकमल प्रकाशन, इलाहाबाद, 1967, पृ. 26, 65, 69 ।
[8] तिवारी, डॉ. राकेश, रॉक पेंटिंग ऑफ मिर्जापुर, यूरेका प्रिन्टर्स,1996, पृ. 23, 25, 26 ।
[9] चक्रवर्ती, के. के., रॉक आर्ट ऑफ इण्डिया, पेंटिंग एण्ड ए ग्रेविंग प्रकाशक, सिटीजन प्रिंटर्स, नई दिल्ली, 1985, पृ. 206 ।
[10] चक्रवर्ती, के. के. और वेडनारिक, राबर्ट जी. इण्डियन रॉक आर्ट ऐण्ड इट्स ग्लोबल कान्टेस्ट, पेंटिंग ऐण्ड ए ग्रेविंग प्रकाशक, सिटीजन प्रिंटर्स, नई दिल्ली, 1985, पृ. 31 ।
[11] डै्रक, ब्रोकमैन गजट इयर, मिर्जापुर, पृ. 284 ।

*Corresponding author.
E-mail address: akanksha.babitaartist.singh@ gmail.com/ kumarratnam65@ gmail.com